International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बांसवाड़ा जिले में कृषि का स्थानिक वितरण प्रतिरूप

डॉ कल्याणमल संगाड़ा
व्याख्याता भूगोल
मामाबालेश्वर दयाल राजकीय महा वद्यालय कुशलगढ़ ;राजस्थान

शोध संक्षेपिका

बांसवाड़ा जिला (23°33श से 23°55श उत्तरी अक्षांश एवं 74°27श से 74°45′ पूर्वी देशांतर) राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है, यह संपूर्ण क्षेत्र जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 5037 वर्ग किलोमीटर एवं कुल जनसंख्या 1797485 (जनगणना 2011) है। जिले का अधिकांश भाग पहाड़ी, पठारी और मैदानी है, धरातल का ढाल सामान्यतः दक्षिण पश्चिम की ओर है। माही नदी का अपवाह तंत्र जिले की अर्थव्यवस्था एवं सिंचाई में विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र मुख्यतः जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है। जिले में 2011 की जनगणना के अनुसार जनजाति का सर्वाधिक 72.3 प्रतिशत है। जिले की मुख्य फसल मक्का है, वागड़ अंचल अर्थात बांसवाड़ा डूंगरपुर जिलों में मक्का को सदाबहार माना जाता है, दोनों जिलों में हर किसान को अपने देश के परंपराएं और मक्का की उपज प्रिय है, इसकी खेती करना गर्व की बात मानते हैं। वागड़ अंचल में मुख्यतः भील जनजाति निवास करती हैं, भील जनजाति में भी मीणा, डामोर, गरासिया इत्यादि उपजातियां आती है, जनजातियां अपने पारंपरिक कृषि उत्पादन द्वारा अपना जीवन निर्वहन करती हैं, यह अपने पारंपरिक संस्कृति एवं सभ्यता के परिवेश में रहकर जीवन बसर करते हैं। सिंचित क्षेत्र को कमी (माही बेसिन को छोड़कर), कृषि की उन्नत तकनीकी की अज्ञानता, आर्थिक स्तर एवं कृषि नवप्रवर्तन के उपकरणों के कम उपयोग के कारण जनजाति कृषक परिवारों की उपज दर अन्य क्षेत्रों की तुलना में कम है। अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर बांसवाड़ा जिले में कृषि का स्थानिक वितरण प्रतिरूप अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

शस्य प्रतिरूप, कृषि गहनता एवं भू–वहन क्षमता, भील जनजाति बाहुल्य क्षेत्र।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावना

शस्य प्रतिरूप का अर्थ किसी निश्चित भूभाग में फसल को उगाने एवं उपजाने से हैं। फसल प्रतिरूप के अंतर्गत फसलों के अंतर्गत शस्यों निश्चित अनुपात से हैं। किसी एक समय बिंदु पर विभिन्न फसलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रफल को प्रदर्शित करता है। वर्तमान समय में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को देखते हुए अध्ययन क्षेत्र में संतुलित विकास, फसल प्रतिरूप में परिवर्तन एवं फसलों की उत्पादकता में समुचित विकास को आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र मूलतः जनजाति बहुल क्षेत्र हैं यहां राजस्थान राज्य की प्रतिशत के आधार पर सर्वाधिक 72.3 प्रतिशत (2011 की जनगणना के अनुसार) निवास करती हैं। इन जनजातीय जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि हैं। कृषि का यह प्रतिरूप कई तत्वों से मिलकर बनता है, अतः इसे समझने के लिए तंत्र सिद्धांत अति आवश्यक एवं उपयोगी है, जिनमें सामाजिक पक्ष, कृषि निवेश, तकनीकी उत्पादों की खपत एवं वितरण मुख्य हैं कृषि की संरचना बोए गई फसलों के आधार पर ही सुनिश्चित होती है। जिसके तहत यह सभी एक दूसरे से प्रभावित होते हैं, से सब मिलकर कृषि प्रतिरूप का निर्धारण करते हैं। बांसवाड़ा जिले में जैविक खेती का इलाका अभी करीब 30 हजार हेक्टेयर के लगभग हैं कारण जनजाति अभी भी पारंपरिक खेती को बढ़ावा दिए जा रही है। बांसवाड़ा जिले की आबादी करीब 18 लाख लगभग है, यहां करीब पांच लाख किसान हैं, खेत का क्षेत्र 2 लाख 35 हजार हेक्टेयर खरीफ और रबी का 1 लाख 42 हजार हेक्टेयर के अंतर्गत आता है। खरीफ फसल के अंतर्गत मक्का, सोयाबीन, उड़द, चावल, कपास आदि एवं रबी में गेहूं, चना एवं मक्का आदि बोया जाता है, सिंचित क्षेत्रों में जायद फसल के अंतर्गत फल, सब्जियो को उगाने पर बल दिया जा रहा है।

भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के परिणाम स्वरुप स्वतंत्रता के पश्चात जोतों का आकार निरंतर छोटा होता गया, जिसके कारण जोतों पर विभिन्न प्रकार की खाद्य फसलें उगाने का प्रयास किया जाने लगा जिससे की जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्यान्न को बढ़ती मांगों की पूर्ति की जा सके। शस्य प्रतिरूप एक परिवर्तनशील अवधारणा है जो समय और स्थान के संदर्भ में परिवर्तित होती रहती हैं विश्व के उन क्षेत्रों में जहां प्राकृतिक विविधता कम मात्रा में पायी जाती हैं वहां शस्य प्रारूप की विविधता का अभाव पाया जाता है। राजस्थान के कम वर्षा वाले क्षेत्रों में किसान प्रायः बाजरा उगाते

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हैं, इसी प्रकार असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में चावल की प्रधानता देखी जाती हैं। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में कृषि अभी भी जीविकोपार्जन के साधन के तौर पर की जाती है और उनमें भी चावल और गेहूं को मुख्य खाद्यान्न फसल के रूप में उगाया जाता है। जिले में 1960 के दशक में हरित क्रांति के आगमन से उन्नत किस्म के बीजों की उपलब्धता तथा वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग एवं कृत्रिम रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग से खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि देखी गई साथ ही 1980 के दशक में माही बजाज सागर परियोजना के पूर्ण होने पर खाद्यान्नों के उत्पादन में ओर वृद्धि देखी गई। अन्य कई विभिन्न प्रकार के प्रयासों से शस्य प्रारूप का विकास हुआ और उसमें परिवर्तन भी होता रहा। कृषि को दीर्घकालीन और अधिक लाभप्रद बनाने के लिए फसल प्रारूप में परिवर्तन करते रहना आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन 5037 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला, बांसवाड़ा जिला है जो दक्षिण राजस्थान के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है बांसवाड़ा जिले का अक्षांशीय 23°33′ उत्तर 23°55 उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार 74°27श पूर्व से 74°45श पूर्वी देशांतर तक है जिला दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश एवं दक्षिण पश्चिम में गुजरात राज्य के साथ सीमा बनाता है। उत्तर की तरफ डूंगरपुर बॉस उदयपुर और प्रतापगढ़ जिला से सीमा लगती है बांसवाड़ा जिला राजस्थान के सबसे दक्षिण में स्थित है दक्षिण का अंतिम स्थान बोरकुंड गांव पड़ता है जिसके बाद एमपी और गुजरात की सीमा प्रारंभ हो जाती है। जिले में मध्यम पूरी दोमट मिट्टी एवं मध्यम लाल दोमट मिट्टी की अधिकता है। बांसवाड़ा जिला कर्क रेखा पर स्थित है, अतः यह उष्णकटिबंधीय जलवायु या उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु के अंतर्गत आता है, जिले में औसत वार्षिक वर्षा 919 मिलीमीटर होती है, अधिक वर्षा के कारण जिले को राजस्थान का चेरापूंजी भी कहा जाता था। बांसवाड़ा जिले की स्थापना राजा बासिया भील चरपोटा ने की थी। इसे सो द्वीपों का नगर भी कहते हैं, क्योंकि यहां से होकर बहने वाली माही नदी में बने माही बजाज सागर में अनेकानेक से द्वीप है। जिले की औसत ऊंचाई 302 मीटर है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानचित्र– बांसवाड़ा जिला राजनीतिक और उदयपुर कृषि प्रदेश

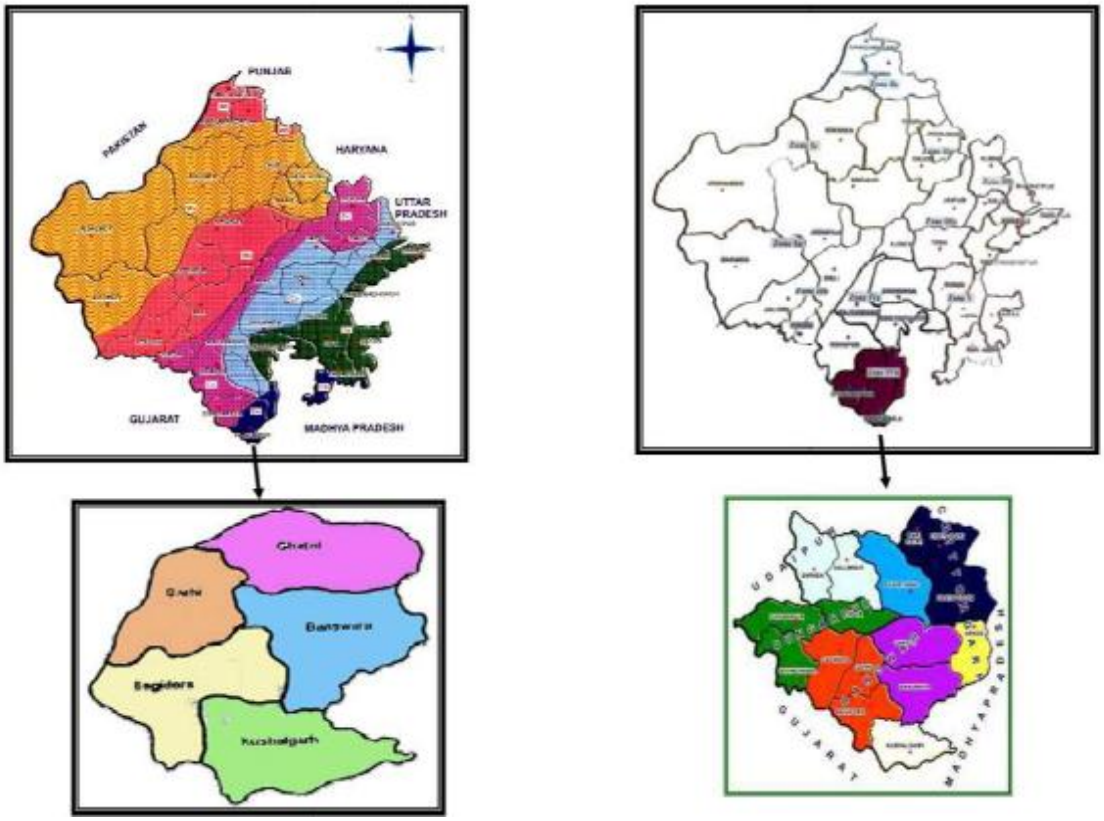

बांसवाड़ा जिला खनिज उत्पादन में विशेष महत्व रखता है, यहां राज्य का सर्वाधिक मैगनीज उत्पादन एवं सोने के सर्वाधिक भंडार पाए जाते हैं इसके साथ ही डोलोमाइट, सॉपस्टोन, ग्रेफाइट, चुना पत्थर और रॉक फास्फेट भी मिलता है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 1798194 जिसमें 908755 पुरुष आर 889439 महिलाओं की संख्या है। जिले को जनसंख्या घनत्व 399 है। बांसवाड़ा जिला मुख्यालय बांसवाड़ा तहसील के अंतर्गत ही आता है जिले में कुल 11 तहसील एवं ब्लॉक हैं।

आंकड़ों के स्त्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों की प्राप्ति हेतु आर्थिक समीक्षा (आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर) एवं जिला सांख्यिकी रूपरेखा एवं बेसिक स्टैटिक्स, राजस्थान के कृषि संबंधित आंकड़े, कृषि विभाग जिला–बांसवाड़ा से संकलित किए गए हैं। अध्ययन हेतु जिले से संबंधित जानकारी के लिए कृषि प्रदेश उदयपुर के आंकड़ों का भी सहारा लिया गया है, क्योंकि बांसवाड़ा जिला राजस्थान के दक्षिणी कृषि प्रदेश उदयपुर के अंतर्गत आता है। विश्लेषित प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन को सुगम एवं बोधगम्य बनाने हेतु सारणी एवं उपयुक्त चित्रों का भी उपयोग किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शस्य / फसल प्रतिरूप

बांसवाड़ा जिले में खाद्यान्न फसलों की प्रधानता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल फसली क्षेत्र 343518 हेक्टेयर हैं। जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र 4.49 लाख हेक्टेयर में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए वर्तमान खरीफ में लगभग 2.31 लाख हेक्टेयर, रबी में 1.36 हेक्टेयर एवं जायद में 15 हजार हेक्टेयर भू–भाग में खाद्यान्न एवं तैलीय फसलों की खेती की जा रही है। खरीफ फसलों में मक्का, सोयाबीन, चावल, उड़द एवं एवं रबी फसलों में मक्का, गेहूं, चावल, चना, मूंग अरहर एवं तैलीय फसलों में सोयाबीन तथा अन्य में कपास इत्यादि की क्षेत्र में बड़े भू–भाग पर कृषि की जा रही हैं।

क्षेत्र में मक्का, सोयाबीन एवं गेहूं के प्रति विशेष रुझान देखा गया है। मक्का का खरीफ एवं रबी दोनों सीजन में उन्नत बीज उपयोग बीज परिवर्तन दर 65ः एवं 90ः दर्ज किया गया है, जो कि उत्पादन वृद्धि का कारण है। गेहूं में उन्नत किस्म की मांग उपयोग एवं जलवायु परिवर्तन भी अधिक उत्पादन का कारण बना है। सोयाबीन में क्षैत्र वृद्धि के अनुरूप उत्पादकता प्राप्त ना होना आगामी वर्षों में इसके परिवर्तन एवं मक्का के उपयोग वृद्धि को इंगित करता है।

जिले में उत्पादन वृद्धि के उपाय

यद्यपि पिछले दस वर्षों में 1.25 लाख टन उत्पादन में वृद्धि देखी गई है, जिससे आगे ओर बढ़ाने के उपाय करने होंगे, इसमें मुख्य रूप से रबी के कास्त योग्य क्षेत्र को वर्तमान बढ़ते हुए क्रम में आगे और बढ़ाना होगा। सूक्ष्म जल सुविधाओं का विस्तार, पानी का सदुपयोग, अंतिम छोर तक पानी पहुंचाने की समुचित व्यवस्था एवं नहरी क्षेत्र के रखरखाव इत्यादि पर ध्यान देना होगा। जिले में मक्का की उपज बढ़ाने के लिए उन्नत बीजों का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। बांसवाड़ा के सूखे प्रभावित क्षेत्रों में माही बजाज सागर से पानी पहुंचाए जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि भूजल स्तर में बढ़ोतरी हो सके साथ ही पीने के पानी की पर्याप्त सुविधा हो सके। कुशलगढ़ ब्लॉक के अंतर्गत पथरीली मिट्टी में कपास उत्पादन पर विशेष ध्यान देना चाहिए हालांकि इस क्षेत्र में कपास उत्पादन में वृद्धि देखने को मिलती हैं।

बांसवाड़ा जिले में 2015–16 से 2017–18 के दौरान खरीफ एवं रबी फसलों का कुल क्षेत्रफल एवं उत्पादन

वर्ष	कृषि सीजन	क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर)			उत्पादन (लाख टन)		
2015–16	खरीफ	1.71	0.62	2.47	2.08	0.85	3.16
	रबी	0.96	0.00	0.97	1.37	0.00	1.86
	कुल	**2.67**	**0.62**	**3.44**	**3.45**	**0.85**	**5.02**
2016–17	खरीफ	1.58	0.70	2.42	2.31	0.83	3.51
	रबी	1.00	0.00	1.19	2.21	0.00	2.21
	कुल	**2.58**	**0.70**	**3.61**	**4.52**	**0.83**	**5.72**
2017–18	खरीफ	1.47	0.70	2.31	2.05	0.81	3.13
	रबी	1.17	0.00	1.36	2.79	0.00	2.79
	कुल	**2.64**	**0.70**	**3.67**	**4.84**	**0.81**	**5.92**

स्तोत्र – राजस्थान खेती – प्रताप सर्वेक्षण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भू–उपयोग सांख्यिकी

बांसवाड़ा जिले में सर्वाधिक भूमि कृषि कार्य में ही संलग्न है परंतु विभिन्न उद्योग धंधे एवं विभिन्न प्रकार की खनिज उद्योग की उपलब्धता के कारण भूमि का उपयोग सभी क्षेत्रों में हो रहा है। जिले में 72: के लगभग आदिवासी जनसंख्या रहती हैं यह पारपरिक कृषि एवं पशुपालन का कार्य विशेषकर करती हैं जिससे भूमि उपयोग भी उसी ढंग से प्रभावित होता है। बांसवाड़ा भूमि उपयोग की जानकारी से पहले राज्य की भूमि उपयोग संबंधी आंकड़ों की सामान्य जानकारी प्राप्त करते हैं।

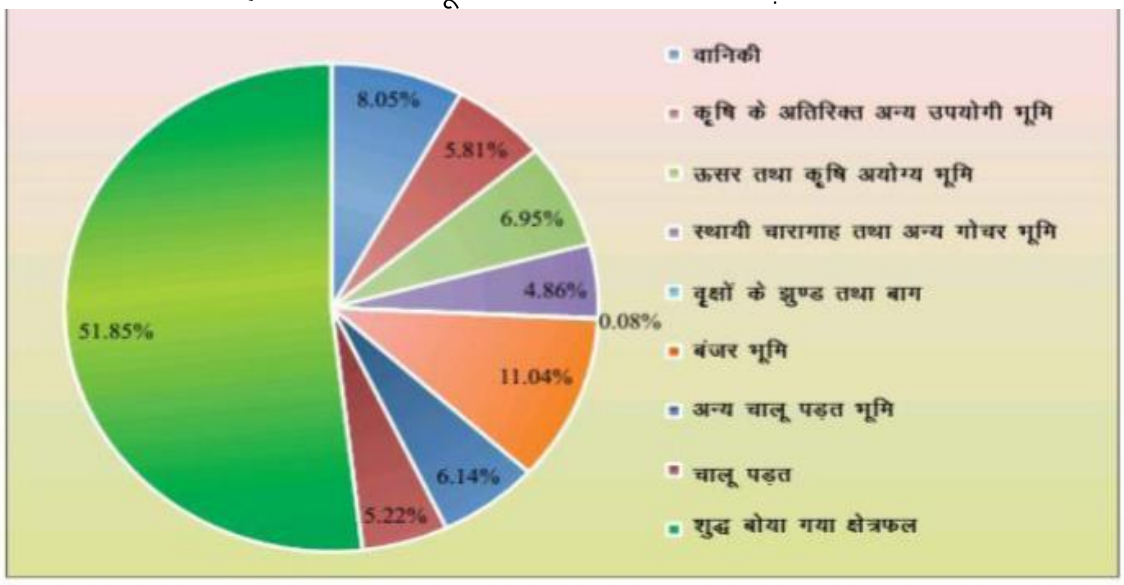

स्त्रोत– आर्थिक समीक्षा 2017–18

भूमि उपयोग का प्रतिरूप रू 2014–15 कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 143587 हेक्टेयर, जंगलात 91269 हेक्टेयर, कृषि अयोग्य 63118 (अ) भूमि जो कृषि के अतिरिक्त और काम में ली गई हो 11423 हेक्टेयर, (ब) ऊसर तथा अ भूमि 51695 हेक्टेयर, जोत रहित भूमि 38009 हेक्टेयर (पड़त भूमि के अतिरिक्त), (अ) स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि 11556 हेक्टेयर, (ब) वृक्षों के झुंड तथा बाग 180 हेक्टेयर, (से) बंजड (कृषि योग्य भूमि) 26273 हेक्टेयर, पड़त भूमि 34270 हेक्टेयर, (अ) अन्य पड़त भूमि 30203 हेक्टेयर, (ब) चालू पड़त एक वर्षीय 4067 हेक्टेयर, वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (दुपज घटाकर) 226921 हेक्टेयर, समस्त बोया गया क्षेत्रफल 343518 हेक्टेयर, दुपज क्षेत्रफल 116597 हेक्टेयर इस प्रकार से बांसवाड़ा में भूमि उपयोग संसाधन विद्यमान है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिले का भूमि उपयोग – 2014–15

1.	कुल भौगोलिक क्षैत्रफल	हैक्टेयर	2014–15	453587
2.	जंगलात	हैक्टेयर		91269
3.	कृषि अयोग्य			63118
अ.	भूमि जो कृषि के अतिरिक्त ओर काम में ली गयी हो	हैक्टेयर		11423
ब.	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	हैक्टेयर		51695
4.	जोत रहित भूमि (पड़त भूमि के अतिरिक्त)	हैक्टेयर		38009
अ.	स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि			11556
ब	वृक्षों के झुण्ड तथा बाग			180
स.	बंजड (कृषि योग्य भूमि)			26273
5.	पडत भूमि	हैक्टेयर		34270
अ.	अन्य पडत भूमि			30203
ब.	चालू पडत एक वर्षीय			4067
6.	वास्तविक बोया गया क्षैत्रफल (दुपज घटाकर)	हैक्टेयर		226921
7.	समस्त बोया गया क्षैत्रफल	हैक्टेयर		343518
8.	दुपज क्षैत्रफल	हैक्टेयर		116597

स्तोत्र – सहायक निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी कार्यालय, बांसवाड़ा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 06, June 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष–

जिले का अधिकांश भाग पठारी, पहाड़ी एवं मैदानी है, जिसमें जनजातीय जनसंख्या निवास करती हैं, शहरों को छोड़कर सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र में जनजातीय वर्ग की जनसंख्या निवास करती हैं। जिले में संतुलित विकास हेतु सिंचाई की कमी को दूर करने के लिए जलाशयों का निर्माण, योजनाबद्ध ढंग से किया जाना तथा आधुनिक कृषि उपकरणों को कृषि कार्यों में उपयोग करने के लिए उत्प्रेरित करना महत्वपूर्ण कारक साबित होगा, क्योंकि अध्ययन क्षेत्र जनजाति है बाहुल्य कृषि निर्माण कृषि निर्वहन भाग हैं। उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिले में मक्का एवं गेहूं का उत्पादन मुख्य खाद्यान्न फसल के रूप में किया जाता है वही नकदी फसल के रूप में सर्वाधिक कपास उत्पादन एवं दलहन में सोयाबीन का उत्पादन किया जाता है। जलवायु दशाएं एवं जिले की भौगोलिक विशेषताएं मक्का एवं कपास उत्पादकों को प्रेरित करती हैं। भूमि उपयोग में भी कृषि क्षेत् के अंतर्गत विशेष बल दिया जाता है, साथ ही जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण तो प्रकृति से जुड़े रहते हैं और जल, जंगल, जमीन से धरातल पर जुड़े रहने का गर्व महसूस करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. मोरिया, चतुर्भुज, ष्कृषि भूगोलष्, एस. बो. पी. डी. पब्लिकेशन, आगरा ।
2. हुसैन, माजिद, (2014) "कृषि भूगोलष् रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. सहायक निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी कार्यालय, बांसवाड़ा (2016) रिपोर्ट द्य
4. State: Rajasthan Agriculture Contingency Plan for District: Banswara (2007- 08)
5. राजस्थान खेती प्रताप, कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (प्रसार शिक्षा निदेशालय), महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
6. GOVERNMENT OF INDIA MINISTRY OF WATER RESOURCES CENTRAL GROUND WATER BOARD: DISTRICT AT A GLANCE & BANSWARA] RAJASTHAN (2013)
7. संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार खंड उदयपुर राजस्थान।
8. प्रशासनिक प्रगति प्रतिवेदन 2017–18 कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर।
9. जिला आपदा प्रबंधन योजना जिला बांसवाड़ा रिपोर्ट वर्ष– 2017।
10. सक्सेना, हरिमोहन (2017), "राजस्थान का भूगोल" (मानव संसाधन विकास मंत्रालय), प्रकाशन हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या 24–28।
11. Badala] mega "Role of changing agricultural pattern and socio economic status of tribal community of Udaipur district: A case study of kherwada and jhadol-" Ph-D thisis Pacific academy of higher education and Research University, Udaipur
12. www-agriculturaldepartment-jaipur-org-in
13. http://www-mapsafindia-com/map/rajasthan
14. Census Report, Rajasthan 2001, Provisional Data, 2011
15. Gole, Uma, 2008, Regional Disparities in Level of Agricultural Development in Chhattisgarh, The Goa Geographer Vol- V] No- 1] pp- 69–72.1
16. Gole] Uma and S.K. Mustak, 2009, "Impact of Irrigational Facilities On Agricultural pattern in Seonath

Basin" Uttar Bharat Bhoogol Patrika] Vol- 41] No- 1] pp 127&130-I

17. Husain] M-] 1972] Crop Combination Regions of Uttar Pradesh] A Study in Methodology] Geographical Review of India] Vol-34, pp 134&156-I
18. https://banswara-rajasthan-gov-in/departmentorder/24/10/24261
19. https://www-google-com/
20. https://www-shodhganga-com
21. Patil, Jayant, 2001, "Agriculture and Horticulture Programmes for Develpoment of Schedule Tribes in India", Vanyajati, Vol-2, pp 15&